C.B.S.E

विषय : हिन्दी 'अ'

कक्षा : 9

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं- क, ख, ग, और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रम से लिखिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।

खंड - क

[अपठित अंश]

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(2×4=8) (1×2=2) [10]

आज जो अधिकांश व्यक्ति दुःखी, तनावग्रस्त और रुग्ण दिखाई पड़ते हैं उसका प्रमुख कारण है कि अब हम न सादा जीवन जीना पसंद करते हैं और न उच्च विचार। हम पाश्चात्य संस्कृति से बहुत प्रभावित हुए हैं। आज उपभोक्तावाद, बाजारवाद और दिखावा का बोलबाला है। "सादा जीवन उच्च विचार"..... यह वाक्य शत प्रतिशत सच है। मनुष्य को चाहिए कि सादा जीवन जिए और उच्च विचारों को जीवन में स्थान दे।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी हों या फिर दुनिया में भारतीय दर्शन का डंका बजाने वाले स्वामी विवेकानंद ऐसी बहुत-सी विभूतियों ने सादगी को अपनाया और जनमानस को भी 'सादा जीवन उच्च विचार' का संदेश दिया। लाल बहादुर

शास्त्री को चाहे लोग किसी भी बात के लिए जानें लेकिन जो शब्द उनके व्यक्तित्व को बखूबी दर्शाते थे वह हैं सादगी, उच्च विचार और शिष्टाचार। यदि सफलता की बुलंदियों को छूता कोई व्यक्ति सादगी अपनाता है तो वह दूसरों के लिए भी आदर्श बन जाता है। यदि हम अपनी आवश्यकता से अधिक उपभोग करते हैं तो यह दूसरे का हक छीनने के समान है। इसी प्रकार यदि हम आवश्यकता से अधिक धन संग्रह करते हैं तो दूसरों को हम उससे वंचित करते हैं। इसीलिए अस्तेय और अपरिग्रह को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। हम त्यागपूर्ण और सादगी पूर्ण जीवन से ही सुखी हो सकते हैं। हमें जीवन में सादगी लानी होगी, पूरे समाज और देश के कल्याण का हित का विचार करना होगा और अनावश्यक भोगवाद से बचना होगा।

1. आज अधिकांश व्यक्ति दुखी क्यों हैं?
2. व्यक्ति आदर्श कब बनता है?
3. लाल बहादुर शास्त्री का जीवन क्या दर्शाता है?
4. अस्तेय और अपरिग्रह का महत्त्व क्यों है?
5. मनुष्य कैसे सुखी हो सकता है?
6. उपर्युक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दें।

खंड - ख

[व्यावहारिक व्याकरण]

प्र.2. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानिए। [1]

पियक्कड़, सोचा,

ख) निम्नलिखित शब्दों के उचित उपसर्ग पहचानिए। [1]

प्रहार, बेपरवाह

ग) निम्नलिखित शब्दों के मूल शब्द और उपसर्ग को अलग कीजिए। [1]

संभ्रांत, अवगत,

घ) निम्नलिखित शब्दों के मूल शब्द और प्रत्यय को अलग कीजिए : [1]

जलन, पुत्रवत

प्र. 3. निम्नलिखित समस्त पद का विग्रह कर समास का नाम लिखें। [4]

1. आशालता 2.सादर 3. लालटोपी 4. नवग्रह

प्र. 4. निम्नलिखित वाक्यों के अर्थ के आधार पर वाक्य भेद बताइए। [4]

1. आप क्या रायपुर रहते हैं?
2. तुम बैठ जाओ।
3. नववर्ष मंगलमय हो।
4. संभवतः इस साल अच्छी वर्षा हो।

प्र. 5. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए: [4]

1. मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।
2. एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास।
3. दिवसावसान का समय
   मेघमय आसमान से उतर रही है
   वह संध्या सुंदरी, परी-सी
4. जरा-से लाल केसर से कि जैसे धूल हो गई।

खंड - ग

[पाठ्य पुस्तक और पूरक पुस्तक]

प्र. 6. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए। [3×2=6]

तुम समझौता कर नहीं सके। क्या तुम्हारी भी वही कमजोरी थी, जो होरी को ले डूबी, वही 'नेम धरम' वाली कमजोरी? 'नेम धरम' उसकी भी जंजीर थी

मगर तुम जिस तरह मुस्करा रहे हो, उससे लगता है कि शायद 'नेम धरम' तुम्हारा बंधन नहीं था, तुम्हारी मुक्ति थी!

क) यहाँ कौन समझौता नहीं कर सका?

ख) होरी को कौन-सी कमजोरी ले डूबी? तथा यह कमज़ोरी किसका बंधन न बन सकी?

ग) 'नेम धरम' उसकी भी जंजीर थी - का आशय क्या है?

प्र. 7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए। [2x4=8]

1. आशय स्पष्ट कीजिए –

   सालिम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाए अथाह सागर बनकर उभरे थे।

2. छोटी बच्ची को बैलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ आया?
3. मैना को किस अपराध में जला दिया गया था?
4. जवारा के नवाब के साथ अपने पारिवारिक संबंधों को लेखिका ने आज के संदर्भ में स्वप्न जैसे क्यों कहा है?
5. ल्हासा की और भ्रमण करते समय तिब्बत के सामाजिक जीवन के बारे में क्या पता चलता है?

प्र. 8. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [2×3=6]

पास ही मिलकर उगी है
बीच में अलसी हटीली
देह की पतली, कमर की है लचीली
नील फूले फूल को सिर पर चढ़ा कर
कह रही है, जो छुए यह
दूँ हृदय का दान उसको

1. अलसी कहाँ उगी हुई है तथा अलसी का पौधा कैसा है?
2. उपर्युक्त पद्यांश में अलसी के लिए किन विशेषणों का प्रयोग किया गया है?
3. अलसी अपने ह्रदय का दान किसे देना चाहती है?

प्र.9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए। [2x4=8]

1. कवि का ब्रज के वन, बाग़ और तालाब को निहारने के पीछे क्या कारण है?
2. कवि के अनुसार आज हर दिशा दक्षिण दिशा क्यों हो गई है?
3. दिन-प्रतिदिन के जीवन में हर कोई बच्चों को काम पर जाते देख रहा/रही है, फिर भी किसी को कुछ अटपटा नहीं लगता। इस उदासीनता के क्या कारण हो सकते हैं?
4. अंतिम दो दोहों के माध्यम से से कबीर ने किस तरह की संकीर्णता की ओर संकेत किया है?
5. कवयित्री ललद्य के अनुसार 'साहिब' से पहचान किस प्रकार हो सकती है?

प्र. 10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दें। [3×2=6]

1. 'शिक्षा बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है'- इस दिशा में लेखिका के प्रयासों का उल्लेख करें।
2. 'रीढ़ की हड्डी' पाठ के आधार पर उमा की माँ 'प्रेमा' समाज के किस वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रही है और कैसे?

खंड - घ

प्र. 11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200 से 250 शब्दों में दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर निबंध लिखिए। [10]

1. यदि में स्वास्थ्य मंत्री होता

- बनने का कारण
- बनने के बाद किए जाने वाले कार्य

2. भाग्य और पुरुषार्थ
3. पश्चिम की ओर बढ़ते कदम
   - पश्चिम की चमक-धमक
   - आकर्षण के कारण
   - बचाव

प्र.12. निम्न विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र लेखन करें। [5]

1. विद्यालय की शैक्षिक यात्रा का वर्णन करते हुए माताजी को पत्र लिखें।
2. नेशनल बुक ट्रस्ट के प्रबंधक को पत्र लिखकर हिन्दी में प्रकाशित नवीनतम साहित्य की पुस्तकें भेजने हेतु अनुरोध कीजिए।

प्र.13. निम्नलिखित किसी एक विषय पर संवाद लेखन करें। [5]

1. महिला और सब्जीवाले के मध्य संवाद लिखें।
2. मालिक और कर्मचारी के बीच हो रहा संवाद लिखिए।

C.B.S.E

विषय : हिन्दी 'अ'

कक्षा : 9

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं- क, ख, ग, और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रम से लिखिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।

खंड - क

[अपठित अंश]

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(2×4=8) (1×2=2) [10]

आज जो अधिकांश व्यक्ति दुःखी, तनावग्रस्त और रुग्ण दिखाई पड़ते हैं उसका प्रमुख कारण है कि अब हम न सादा जीवन जीना पसंद करते हैं और न उच्च विचार। हम पाश्चात्य संस्कृति से बहुत प्रभावित हुए हैं। आज उपभोक्तावाद, बाजारवाद और दिखावा का बोलबाला है। "सादा जीवन उच्च विचार"..... यह वाक्य शत प्रतिशत सच है। मनुष्य को चाहिए कि सादा जीवन जिए और उच्च विचारों को जीवन में स्थान दे।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी हों या फिर दुनिया में भारतीय दर्शन का डंका बजाने वाले स्वामी विवेकानंद ऐसी बहुत-सी विभूतियों ने सादगी को अपनाया और जनमानस को भी 'सादा जीवन उच्च विचार' का संदेश दिया। लाल बहादुर

शास्त्री को चाहे लोग किसी भी बात के लिए जानें लेकिन जो शब्द उनके व्यक्तित्व को बखूबी दर्शाते थे वह हैं सादगी, उच्च विचार और शिष्टाचार। यदि सफलता की बुलंदियों को छूता कोई व्यक्ति सादगी अपनाता है तो वह दूसरों के लिए भी आदर्श बन जाता है। यदि हम अपनी आवश्यकता से अधिक उपभोग करते हैं तो यह दूसरे का हक छीनने के समान है। इसी प्रकार यदि हम आवश्यकता से अधिक धन संग्रह करते हैं तो दूसरों को हम उससे वंचित करते हैं। इसीलिए अस्तेय और अपरिग्रह को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। हम त्यागपूर्ण और सादगी पूर्ण जीवन से ही सुखी हो सकते हैं। हमें जीवन में सादगी लानी होगी, पूरे समाज और देश के कल्याण का हित का विचार करना होगा और अनावश्यक भोगवाद से बचना होगा।

1. आज अधिकांश व्यक्ति दुखी क्यों हैं?

   उत्तर : आज जो अधिकांश व्यक्ति दु:खी, तनावग्रस्त और रुग्ण दिखाई पड़ते हैं उसका प्रमुख कारण है कि अब हम न सादा जीवन जीना पसंद करते हैं और न उच्च विचार। हम पाश्चात्य संस्कृति से बहुत प्रभावित हुए हैं।

2. व्यक्ति आदर्श कब बनता है?

   उत्तर : यदि सफलता की बुलंदियों को छूता कोई व्यक्ति सादगी अपनाता है तो वह दूसरों के लिए भी आदर्श बन जाता है।

3. लाल बहादुर शास्त्री का जीवन क्या दर्शाता है?

   उत्तर : लाल बहादुर शास्त्री को चाहे लोग किसी भी बात के लिए जानें लेकिन जो शब्द उनके व्यक्तित्व को बखूबी दर्शाते थे वह हैं सादगी, उच्च विचार और शिष्टाचार।

4. अस्तेय और अपरिग्रह का महत्त्व क्यों है?

उत्तर : यदि हम अपनी आवश्यकता से अधिक उपभोग करते हैं तो यह दूसरे का हक छीनने के समान है। इसी प्रकार यदि हम आवश्यकता से अधिक धन संग्रह करते हैं तो दूसरों को हम उससे वंचित करते हैं। इसीलिए अस्तेय और अपरिग्रह को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है।

5. मनुष्य कैसे सुखी हो सकता है?

उत्तर : हम त्यागपूर्ण और सादगी पूर्ण जीवन से ही सुखी हो सकते हैं। हमें जीवन में सादगी लानी होगी, पूरे समाज और देश के कल्याण का हित का विचार करना होगा और अनावश्यक भोगवाद से बचना होगा।

6. उपर्युक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दें।

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक 'सादा जीवन उच्च विचार' है।

खंड - ख

[व्यावहारिक व्याकरण]

प्र.2. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानिए। [1]

पियक्कड़, सोचा,

उत्तर : अक्कड़, आ

ख) निम्नलिखित शब्दों के उचित उपसर्ग पहचानिए। [1]

प्रहार, बेपरवाह

उत्तर : प्र, बे

ग) निम्नलिखित शब्दों के मूल शब्द और उपसर्ग को अलग कीजिए। [1]

संभ्रांत, अवगत,

उत्तर : सम्+भ्रांत, अव+गत

घ) निम्नलिखित शब्दों के मूल शब्द और प्रत्यय को अलग कीजिए : [1]

जलन, पुत्रवत

उत्तर : जल+अन, पुत्र+वत

प्र. 3. निम्नलिखित समस्त पद का विग्रह कर समास का नाम लिखें। [4]

1. आशालता 2.सादर 3. लालटोपी 4. नवग्रह

समस्त पद	विग्रह	समास
आशालता	आशारूपी लता	कर्मधारय समास
सादर	आदर सहित	अव्ययीभाव समास
लालटोपी	लाल है जो टोपी	कर्मधारय समास
सात दिनों का समाहार	नौ ग्रहों का समूह	द्विगु समास

प्र. 4. निम्नलिखित वाक्यों के अर्थ के आधार पर वाक्य भेद बताइए। [4]

1. आप क्या रायपुर रहते हैं?

   उत्तर : प्रश्नार्थक वाक्य

2. तुम बैठ जाओ।

   उत्तर : आज्ञार्थक वाक्य

3. नववर्ष मंगलमय हो।

   उत्तर : इच्छा वाचक वाक्य

4. संभवतः इस साल अच्छी वर्षा हो।

उत्तर : संदेहार्थक वाक्य

प्र. 5. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए: [4]

1. मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

उत्तर : मानवीकरण अलंकार

2. एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास।

उत्तर : रुपक अलंकार

3. दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या सुंदरी, परी-सी

उत्तर : मानवीय करण अलंकार

4. जरा-से लाल केसर से कि जैसे धूल हो गई।

उत्तर : उत्प्रेक्षा अलंकार

खंड - ग

[पाठ्य पुस्तक और पूरक पुस्तक]

प्र. 6. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए। [3×2=6]

तुम समझौता कर नहीं सके। क्या तुम्हारी भी वही कमजोरी थी, जो होरी को ले डूबी, वही 'नेम धरम' वाली कमजोरी? 'नेम धरम' उसकी भी जंजीर थी मगर तुम जिस तरह मुस्करा रहे हो, उससे लगता है कि शायद 'नेम धरम' तुम्हारा बंधन नहीं था, तुम्हारी मुक्ति थी!

क) यहाँ कौन समझौता नहीं कर सका?

उत्तर : यहाँ प्रेमचंद समझौता नहीं कर सका।

ख) होरी को कौन-सी कमजोरी ले डूबी? तथा यह कमज़ोरी किसका बंधन न बन सकी?

उत्तर : होरी को नियम धर्म को कमज़ोरी ले डूबी तथा यह कमज़ोरी प्रेमचंद का बंधन न बन सकी।

ग) 'नेम धरम' उसकी भी जंजीर थी - का आशय क्या है?

उत्तर : 'नेम धरम' उसकी भी जंजीर थी - का आशय है कि नेम धरम के कारण होरी आजीवन दुःख सहता रहा।

प्र. 7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए। [2x4=8]

1. आशय स्पष्ट कीजिए –

सालिम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाए अथाह सागर बनकर उभरे थे।

उत्तर : सालिम अली प्रकृति के खुले संसार में खोज करने के लिए निकले। उन्होंने स्वयं को किसी सीमा में कैद नहीं किया। टापू बंधन तथा सीमा का प्रतीक है और सागर की कोई सीमा नहीं होती है। उसी प्रकार सालिम अली भी बंधन मुक्त होकर अपनी खोज करते थे। उनकी खोज की कोई सीमा नही थी। उनका कार्यक्षेत्र बहुत विशाल था।

2. छोटी बच्ची को बैलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ आया?

उत्तर : छोटी बच्ची का बैलों के प्रति प्रेम उमड़ने के निम्नलिखित कारण हैं-

- छोटी बच्ची की माँ मर चुकी थी। वह माँ के बिछुड़ने का दर्द जानती थी। उसे लगा कि वे भी उसी की तरह अभागे हैं और अपने मालिक से दूर हैं।

- छोटी बच्ची को उसकी सौतेली माँ सताती थी, यहाँ हीरा-मोती पर भी अत्याचार हो रहा था।

3. मैना को किस अपराध में जला दिया गया था?

   उत्तर : मैना को सिर्फ अंग्रेज सरकार के प्रमुख शत्रु नाना-साहब की बेटी होने के अपराध में जला दिया गया था।

4. जवारा के नवाब के साथ अपने पारिवारिक संबंधों को लेखिका ने आज के संदर्भ में स्वप्न जैसे क्यों कहा है?

   उत्तर : पहले हिंदु और मुस्लिम दो सम्प्रदायों में आज के जैसा भेदभाव नहीं था। उदाहरणस्वरूप- ज्वारा के नवाब के साथ महादेवी वर्मा के पारिवारिक संबंध सगे-संबंधियों से भी अधिक बढ़कर थे। जवारा की बेगम स्वयं को महादेवी की ताई समझती थी तथा उन्होंने ही इनके भाई का नामकरण भी किया। वे हर त्योहार पर उनके साथ घुलमिल जाती थी। बेगम साहिबा के घर में अवधी बोली जाती थी। परन्तु हिंदी और उर्दू भी चलती थी। पहले वातावरण में जितनी निकटता थी, वह अब सपना हो गई है। ऐसे में आत्मीय संबंधों की आज के समय में कल्पना भी नहीं की जा सकती।

5. ल्हासा की और भ्रमण करते समय तिब्बत के सामाजिक जीवन के बारे में क्या पता चलता है?

   उत्तर : प्रस्तुत यात्रा-वृत्तान्त के आधार पर उस समय का तिब्बती समाज के बारे में पता चलता है कि-

   तिब्बत के समाज में छुआछूत, जाती-पाँति आदि कुप्रथाएँ नहीं थी।

सारे प्रबंध की देखभाल कोई भिक्षु करता था। वह भिक्षु जागीर के लोगों में राजा के समान सम्मान पाता था। उस समय तिब्बती की औरतें परदा नहीं करती थीं। उस समय तिब्बती की जमीन जागीरदारों में बँटी थी जिसका ज्यादातर हिस्सा मठों के हाथ में होता था।

प्र. 8. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [2×3=6]

पास ही मिलकर उगी है
बीच में अलसी हटीली
देह की पतली, कमर की है लचीली
नील फूले फूल को सिर पर चढ़ा कर
कह रही है, जो छुए यह
दूँ ह्रदय का दान उसको

1. अलसी कहाँ उगी हुई है तथा अलसी का पौधा कैसा है?

   उत्तर : अलसी चने के पौधे के पास सटकर उगी हुई है। अलसी का पौधा पतला, लंबा है।

2. उपर्युक्त पद्यांश में अलसी के लिए किन विशेषणों का प्रयोग किया गया है?

   उत्तर : अलसी के लिए हटीली, देह की पतली, कमर की लचीली आदि विशेषणों का प्रयोग किया गया है।

3. अलसी अपने ह्रदय का दान किसे देना चाहती है?

   उत्तर : अलसी अपने ह्रदय का दान उसके फूलों को प्रेमपूर्वक छूनेवाले को देना चाहती है।

प्र.9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए। [2x4=8]

1. कवि का ब्रज के वन, बाग़ और तालाब को निहारने के पीछे क्या कारण है?

   उत्तर : कवि कृष्ण से जुडी हर वस्तु से अपार प्रेम करता है। जिस वन बाग़, और तालाब में कृष्ण ने अपनी नाना प्रकार की क्रीड़ाएँ की है उन्हें कवि निरंतर निहारना चाहते हैं क्योंकि इससे उन्हें सुख की दिव्य अनुभूति होती है।

2. कवि के अनुसार आज हर दिशा दक्षिण दिशा क्यों हो गई है?

   उत्तर : आज मनुष्य का जीवन कहीं भी सुरक्षित नहीं रह गया है। चारों और असंतोष, हिंसा और विध्वंसक ताकतें फैली हुईं हैं। एक ओर जहाँ हम सभ्यता के विकास के लिए आधुनिक आविष्कार कर रहे हैं तो दूसरी ओर विध्वंसक हथियारों का भी उसी रफ़्तार से निर्माण हो रहा है। हिंसा और आंतक इतना फ़ैल चूका है कि अब मौत की एक दिशा नहीं है बल्कि संसार के हर एक कोने में मौत अपना डेरा जमाए बैठी है। कवि सभ्यता के विकास की इसी खतरनाक दिशा के कारण कह रहा है कि आज हर दिशा दक्षिण दिशा बन गई है।

3. दिन-प्रतिदिन के जीवन में हर कोई बच्चों को काम पर जाते देख रहा/रही है, फिर भी किसी को कुछ अटपटा नहीं लगता। इस उदासीनता के क्या कारण हो सकते हैं?

   उत्तर : इस प्रकार की उदासीनता के कई कारण हो सकते हैं जैसे-

   - आज के मनुष्य का आत्मकेंद्रित होना। वे केवल अपने और अपने बच्चों के बारे में ही सोचते हैं।

- जागरूकता तथा जिम्मेदारी की कमी के कारण लोग सोचते हैं कि यह उनका नहीं सरकार का काम है।
- व्यस्तता के कारण भी आज के लोग अपनी ही परेशानियों में इस कदर खोये हुए हैं कि उन्हें दूसरे की समस्या से कोई सरोकार नहीं होता है।
- लोगों को कम कीमत में अच्छे श्रमिक मिल जाते हैं इसलिए भी वे इसके विरूद्ध कोई कदम नहीं उठाना चाहते हैं।

4. अंतिम दो दोहों के माध्यम से से कबीर ने किस तरह की संकीर्णता की ओर संकेत किया है?

   उत्तर : अंतिम दो दोहों में दो तरह की संकीर्णता की ओर संकेत किया है-

   - अपने अपने धर्म को श्रेष्ठ सिद्ध करना और दूसरे के धर्म की निंदा करना।
   - ऊँचे कुल के गर्व में जीने की संकीर्णता। मनुष्य केवल ऊँचे कुल में जन्म लेने से बड़ा नहीं होता वह बड़ा बनता है तो अपने अच्छे कर्मों से।

5. कवयित्री ललद्य के अनुसार 'साहिब' से पहचान किस प्रकार हो सकती है?

   उत्तर : कवयित्री ललद्य के अनुसार 'साहिब' से पहचान अपने भीतर को टटोलने से ही हो सकती है। कवयित्री के अनुसार साहिब अर्थात् ईश्वर तो हर जगह और हर प्राणी में वास करते हैं। वे हिंदू या मुसलमान में भेद नहीं करते। यदि आप अपने अंदर टटोलने की कोशिश करेंगे तो आपको ईश्वर मिल जाएँगे।

प्र. 10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दें। [3×2=6]

1. 'शिक्षा बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है'- इस दिशा में लेखिका के प्रयासों का उल्लेख करें।

उत्तर : 'शिक्षा बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है'- इस दिशा में लेखिका ने निम्न प्रयास किए।

शादी के बाद जब लेखिका को कर्नाटक के छोटे से कस्बे बागनकोट में रहना पड़ा तो वहाँ उनके ही बच्चों को पढ़ने की कोई उचित व्यवस्था नहीं थी अतः लेखिका ने वहाँ पर स्कूल खुलवाने के लिए बिशप से प्रार्थना की परन्तु जब बिशप तैयार नहीं हुए तो उन्होंने अपनी कोशिशों तथा कुछ उत्साही लोगों की मदद से स्कूल खोला। उसे सरकारी मान्यता दिलवाई, जिससे स्थानीय बच्चों को शिक्षा के लिए दूर न जाना पड़े।

2. 'रीढ़ की हड्डी' पाठ के आधार पर उमा की माँ 'प्रेमा' समाज के किस वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रही है और कैसे?

उत्तर : 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में उमा की माँ 'प्रेमा' भारतीय घरेलू माँ का प्रतिनिधित्व करती है। प्रेम एक साधारण घरेलू महिला है, जिसके अनुसार स्त्रियों को बहुत अधिक पढ़ाना उचित नहीं है क्योंकि इससे वे सिर पर चढ़ जाती है। प्रेमा के लिए काम चलाऊ पढ़ाई-लिखाई उचित है। अपने बेटी की विवाह की जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए वह अपने पति के झूठ में भी शामिल हो जाती है।

खंड – घ

प्र. 11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200 से 250 शब्दों में दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर निबंध लिखिए। [10]

यदि में स्वास्थ्य मंत्री होता

- बनने का कारण
- बनने के बाद किए जाने वाले कार्य

यदि मैं अपने देश का स्वास्थ्य मंत्री होता तो अपने आपको, सचमुच बड़ा भाग्यशाली मानता, क्योंकि देश-सेवा का ऐसा सुनहरा अवसर और कोई हो ही नहीं सकता क्योंकि स्वस्थ लोगों से ही एक सबल राष्ट्र की कल्पना की जा सकती है।

बचपन से ही मेरे मन में स्वास्थ्य मंत्री बनने की इच्छा थी इसका कारण यह था कि मैं बचपन में जिस कस्बे में पला बढ़ा वहाँ पर प्राथमिक उपचार की भी सुविधा नहीं थी। इस कारण कई बार लोगों को जान से हाथ धोना पड़ा। खुद मेरे दादाजी को सही उपचार न मिलने के कारण उनकी मृत्यु मेरी ही आँखों के सामने हुई।

मैं अपने कार्यकाल के दौरान देश में आम नागरिकों को सस्ती और उचित स्वास्थ्य सेवाओं को पहुँचाने हेतु सरकारी अस्पताल का अधिक से अधिक निर्माण करता। जहाँ जनता को मुफ्त जाँच मुफ्त, इलाज, दवाईंयाँ आदि मिलती। मैं जेनेरिक दुकानों में भी वृद्धि करता जिसके फलस्वरूप महँगी दवाई बेचने वालों पर मैं लगाम कस सकता। महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए संसद में एक अलग बजट पेश करता।

भारत वासियों के स्वास्थ्य सुधार के लिए ठोस कदम उठाता, गाँवों की स्वास्थ्य प्रगति के लिए पंचायतों को विशेष अधिकार देता, समाजसुधारकों और ग्राम सेवकों को भी प्रोत्साहित करता।

स्वास्थ्य मंत्री होने के नाते मैं प्रदूषण फैलाने वाली इकाइयों पर प्रतिबंध लगाता। पर्यावरणीय स्वच्छता के लिए प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगा देता और दूसरी और वृक्षारोपण और स्वच्छता अभियान को अधिक से अधिक बढ़ावा देने के लिए गाँव-गाँव और नगर-नगर नागरिक समितियों का गठन करता और पूरे देश को इसमें सह भागी करता। गंदगी करनेवालों, प्रदूषण फैलाने वाले, नियम और कानून तोड़ने वालों पर कड़ी कार्यवाही करता।

मैं स्वयं अपनी सेवा कर्तव्यनिष्ठा से एक आदर्श प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता। मैं विरोधी पक्षों के दृष्टिकोण को समझने की पूरी कोशिश करता और देश की स्वास्थ्य समस्याओं को हल करने के लिए उनका सहयोग लेता। अपने सहयोगी के सदस्यों को मैं उनकी योग्यता के अनुसार उचित जिम्मेदारी सौंपता, उस सब के प्रति मेरा व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण तथा निष्पक्ष होता, फिर भी किसी तरह भ्रष्टाचार को बर्दाश्त न करता। स्वास्थ्य मंत्री के नाते में अपना लक्ष्य देश को हर तरह से सुखी और समृद्ध और स्वस्थ बनाने की ओर ही केंद्रित करता।

भाग्य और पुरुषार्थ

भाग्य और पुरुषार्थ। कभी लगता है भाग्य श्रेष्ठ है। कभी लगता है कि पुरुषार्थ श्रेष्ठ है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी-अपनी धारणा होती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता कठिन परिश्रम से ही मिलती है। अकर्मण्य व्यक्ति देश, जाति, समाज और परिवार के लिए एक भार बन जाते हैं। जो व्यक्ति दूसरों का मुँह ताकते रहते हैं, वह पराधीन हैं- दास हैं।

कुछ लोग यह समझते हैं कि 'वही होगा जो मंजूरे खुदा होगा' और अकर्मण्य बन जाते हैं। ऐसे लोग भाग्यवाद में विश्वास करते हैं और प्रयत्न से कोसों दूर रह जाते हैं। आलसी कभी सफलता नहीं पाता। केवल आलसी लोग ही हमेशा 'दैव-दैव' करते रहते हैं और कर्मशील लोग 'दैव-दैव आलसी पुकारा' कहकर उनका उपहास करते हैं।

यह संसार कर्म करने वालों की पूजा करता है। कर्मशील व्यक्ति भाग्य को अपने वश में कर लेते हैं। पर्वत भी इनके आगे शीश झुकाते हैं।
मनुष्य परिश्रम के द्वारा कठिन से कठिन कार्य सिद्ध कर सकता है। परिश्रम अर्थात् मेहनत के ही द्वारा मनुष्य अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। कोई भी कार्य केवल हमारी इच्छा मात्र से ही नहीं सिद्ध होता है, उसके लिये हमें कठिन परिश्रम का सहारा लेना पड़ता है। जैसे सोए हुए शेर के मुख में पशु स्वयं ही प्रवेश नही करता उसे भी परिश्रम करना पड़ता है, वैसे ही केवल मन की इच्छा से काम सिद्ध नही होते उनके लिये परिश्रम करना पड़ता है। प्राचीन ग्रंथ, महाभारत में भी गुरू द्रोण के शिष्य अर्जुन, कठिन परिश्रम के ही द्वारा सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बन सके। भारत देश की स्वतंत्रता भी गांधी जी और नेहरू जी जैसे महापुरुषों के परिश्रम का फल है। परिश्रम ही सफ़लता की कुंजी है।

पश्चिम की ओर बढ़ते कदम

- पश्चिम की चमक-धमक
- आकर्षण के कारण
- बचाव

आज समस्त विश्व पाश्चात्य संस्कृति का अनुपालन आँख मूंदें कर कर रहा है, ऐसे में भला हमारे भारतवासी कहाँ पीछे रहने वाले हैं। अतः भारत में भी पाश्चात्य सभ्यता-संस्कृति का अनुगमन व अनुपालन बिना आगा-पीछे-सोचे धड़ल्ले से किया जा रहा है। लोग इसके अनुपालन कर स्वयं को आधुनिक एवं विकसित देशों के समक्ष मानने लगे हैं।
पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव हमारी वेशभूषा पर अधिक दिखाई देता है। अतिश्योक्ति नहीं होगी अगर यह कहा जाय कि न सिर्फ युवा बल्कि बच्चे भी इस फैशन से अछूते नहीं हैं। आज हम बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक में फैशन के प्रति सजगता देख सकते हैं। जिस तीव्रता से फैशन के प्रति लोगों में

आकर्षण बढ़ा है और हर बात को फैशन के नाम पर सहजता से लेने का प्रयास होता वह निश्चित रूप से शुभ संकेत तो कतई नहीं है। फैशन को बढ़ावा देने के अनेकों कारण हो सकते हैं। परंतु हमारे देश में पश्चिमी सभ्यता के कुछ ज्यादा ही प्रभाव है। हम पश्चिम की देखा देखी में अपने वास्तविक परिधानों और वेशभूषा को भूलते जा रहे हैं। हमारे पुराने और पारंपरिक वस्त्र तो जैसे गायब ही हो गए हैं।

आज हमारी खासकर युवा पीढ़ी फैशन की इस अंधी होड़ में अपने संस्कार, सभ्यता व संस्कृति को शने-शने भूलती जा रही। शालीनता और सादगी से उन्हें परहेज होता जा रहा है। अब तो हद यह हो गई है कि परिधानों से आप लड़का और लड़की में अंतर भी नहीं कर पाते। आज तो लड़के भी कान छिदवाने और लंबे बाल रखने लगे हैं। लड़कियाँ भी लड़कों के समान ही वेशभूषा धारण करने लगी है। भारतीय परिधानों को आउट डेटेट कहकर नकार देते हैं।

फैशन की इस प्रवृत्ति के कारण कई तरह के अपराध भी होते है और हमारे नैतिक मूल्यों का भी हास्र होता है। आज बड़े-बड़े व्यापारिक संस्थान लाभ कमाने हेतु विभिन्न प्रकार के फैशन से संबंधित विज्ञापन देते हैं। इसके प्रचार-प्रसार में पत्रिकाएँ, टेलीविजन आदि भी पीछे नहीं रहते। चैनलों पर प्रसारित होने वाले फैशन संबंधित कार्यक्रमों में आपत्तिजनक वेशभूषा में मॉडलों को रैंप पर कैटवाक करते हुए दिखाया जाता है। फिल्मों में कहानी से ज्यादा फैशन को प्रमुखता से दिखाया जाना है। एक तरफ जहाँ महिलाओं में धारावाहिकों के पात्रों के परिधान और डिजाइनर के कपड़े चर्चा का केन्द्र बनते तो दूसरी तरफ युवाओं के बीच हर उस नई आने वाली फिल्मों में इस्तेमाल किये गये फैशनेबल कपड़ें से लेकर जूते या फिर कोई नई तकनीक के इलेक्ट्रोनिक आइटम चर्चा का केन्द्र बनते। ये कुछ कारण है जिससे हमारी सामजिक और नैतिकमूल्यों का पतन होता है।

प्र.12. निम्न विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र लेखन करें। [5]

1. विद्यालय की शैक्षिक यात्रा का वर्णन करते हुए माताजी को पत्र लिखें।

102, राजहंस छात्रावास

लाजपत नगर

नई दिल्ली

दिनाँक: 25-10-200

आदरणीय माताजी

सादर प्रणाम।

आशा करता हूँ आप सभी स्वस्थ होंगे। मैं भी यहाँ छात्रावास में सकुशल हूँ। जैसा कि आपको पता ही है विद्यालय की तरफ से हम शैक्षिक यात्रा के लिए इस बार लखनऊ गए थे। उसी यात्रा के बारे में बताने के लिए मैंने यह पत्र आपको लिखा है। दिनाँक 12 अक्टूबर को हम ट्रेन द्वारा लखनऊ रवाना हुए। ट्रेन में भी हमने खूब मौज-मस्ती की। लखनऊ पहुँचने के बाद एक बंगले में हमें ठहराया गया था। प्रात:काल हमें लखनऊ की प्रसिद्ध जगहों पर ले जाया गया। माताजी वैसे तो मुझे वहाँ कि सभी जगहें अच्छी लगी परन्तु वहाँ के भूलभुलैया किले को में कभी भी नहीं भूल पाऊँगा, कारीगरी तथा योजना बद्ध तरीके का ऐसा अनुपम उदहारण कहीं भी देखने को नहीं मिलेगा। वहाँ की काफी सारी मीठी यादों के साथ हम सभी लौटे।

पिताजी और भाईसाहब को मेरा सादर प्रणाम तथा छोटी बहन को प्यार।

आपका प्रिय पुत्र

सुशील

अथवा

2. नेशनल बुक ट्रस्ट के प्रबंधक को पत्र लिखकर हिन्दी में प्रकाशित नवीनतम साहित्य की पुस्तकें भेजने हेतु अनुरोध कीजिए।

राम भवन

सोलापुर

दिनाँक: 15 मार्च 20xx

सेवा में,

प्रबंधक

नेशनल बुक ट्रस्ट

दरियागंज

नई दिल्ली

विषय : पुस्तकें मँगवाने हेतु प्रार्थना पत्र।

महोदय,

मुझे हिन्दी में प्रकाशित इस महीने की नवीनतम पुस्तकें जल्दी ही चाहिए। मैंने पुस्तकों की अग्रिम राशि रूपए 2500 भी दिनाँक 10 मार्च को मनी आर्डर से भेज दी है। अत: आपसे निवेदन है कि मुझे जल्द-से-जल्द पुस्तकों वी.पी.पी से भेजने का प्रयास करें।

धन्यवाद।

भवदीय

सौरभ चटर्जी

प्र.13. निम्नलिखित किसी एक विषय पर संवाद लेखन करें। [5]

1. महिला और सब्जीवाले के मध्य संवाद लिखें।

सब्जीवाला : क्या चाहिए मेडम?

महिला : प्याज।

सब्जीवाला : छोटे या बड़े

महिला : दोनों के क्या दाम है?

सब्जीवाला : छोटे 25 रु. और बड़े 20 रु. किलो

महिला : दो दिन पहले तो मैंने छोटे प्याज 20 रु. में खरीदे थे।

सब्जीवाला : आप सही कह रही है परंतु आज मार्केट में प्याज के दाम बढ़ गए है।

महिला : आप ठीक भाव लगा देना, मैं दूसरी सब्जी भी लेनेवाली हूँ।

सब्जीवाला : देखते है, और क्या दूँ?

महिला : आलू कैसे?

सब्जीवाला : 20 रु. किलो

महिला : 1 किलो देना

सब्जीवाला : ये लीजिए।

महिला : अब ठीक हिसाब कर दो।

सब्जीवाला : ठीक है मैडमजी।

अथवा

2. मालिक और कर्मचारी के बीच हो रहा संवाद लिखिए।

मालिक : आज भी आप देरी से आए!

कर्मचारी : माफ़ करना साहब।

मालिक : कभी-कबार मैं समझ सकता हूँ परंतु लगातार देरी से आना अच्छा नहीं।

कर्मचारी : क्या करूँ घर पर कुछ न कुछ काम से देरी हो ही जाती है।

मालिक : आप ऐसा तर्क न दे समझे?

कर्मचारी : जी ..

मालिक : यहाँ सभी कर्मचारी के घर पर कोई न कोई समस्या रहती है पर सभी आ ही जाते है।

कर्मचारी : मैं आगे से ध्यान रखूँगा।

मालिक : हाँ तुम्हें रखना ही होगा। इससे ऑफिस का शिष्टाचार खराब होता है।